

B.Com.- III Sem-V
BCOM355 - Commercial Law

P. Pages : 3

Time : Three Hours



GUG/S/19/916

Max. Marks : 80

- Notes : 1. All questions are compulsory.
2. All questions carry equal marks.

1. a) Explain the expressly void agreements under Indian Contract Act. 8
b) Explain the characteristics of contract of Guarantee and state the kind of Guarantee. 8

OR

c) Explain in detail the concept of 'free consent'. 16
2. a) Explain the rights of partners. 8
b) Explain the types of partners. 8

OR

c) Explain the rules to delivery of goods under sale of goods act 1930. 16
3. a) Explain the concept of 'unfair trade practices' under consumer protection Act 1986. 8
b) Define Negotiable Instrument Act and explain its characteristics. 8

OR

c) Explain the presentation of Negotiable Instrument. Explain the rules regarding presentation of negotiable instrument for acceptance. 16
4. a) Define value added tax and explain its importance. 8
b) Explain the concept of sale and interstate sale under value added tax. 8

OR

c) Explain the concept of service tax. Explain payment and recovery of service tax. 16
5. Write short notes.
- a) Lawful consideration. 4
b) Registration of partnership. 4
c) Methods of crossing cheques. 4
d) Central Value Added Tax (CENVAT). 4

B.Com.- III Sem-V
BCOM355 - Commercial Law

Time : Three Hours

Max. Marks : 80

- सूचना :- 1. सर्व प्रश्न अनिवार्य आहेत.
2. सर्व प्रश्नांना समान गुण आहेत.

1. अ) भारतीय करार अधिनियमानुसार स्पष्टपणे शुन्य ठराव कोणते, ते स्पष्ट करा. 8
ब) प्रत्याभूतीच्या (हमीच्या) कराराची वैशिष्ट्ये स्पष्ट करा तसेच प्रत्याभूतीचे प्रकार विशद करा. 8
किंवा
क) 'मुक्त संमती' ही संकल्पना सविस्तर स्पष्ट करा. 16
2. अ) भागीदारांचे अधिकार स्पष्ट करा. 8
ब) भागीदारांचे प्रकार स्पष्ट करा. 8
किंवा
क) वस्तु विक्री अधिनियम 1930 च्या अंतर्गत वस्तु प्रदानासंबंधी नियम स्पष्ट करा. 16
3. अ) ग्राहक संरक्षण कायदा 1986 अंतर्गत "अनुचित व्यापारी प्रथा" ही संकल्पना स्पष्ट करा. 8
ब) परक्राम्य विलेखाची व्याख्या करा व त्याची वैशिष्ट्ये स्पष्ट करा. 8
किंवा
क) परक्राम्य विलेखाचे प्रस्तुतीकरण स्पष्ट करा. परक्राम्य विलेख स्विकृती करीता प्रस्तुत करण्यासंबंधीचे नियम स्पष्ट करा. 16
4. अ) मुल्यवर्धित कराची व्याख्या करा व त्याचे महत्व स्पष्ट करा. 8
ब) मुल्यवर्धित कर अंतर्गत विक्री व आंतरराज्यीय विक्री ही संकल्पना स्पष्ट करा. 8
किंवा
क) सेवा कराची संकल्पना स्पष्ट करा. सेवा कराचे शोधन आणि वसुली चा अर्थ स्पष्ट करा. 16
5. थोडक्यात टिपा लिहा.
अ) कायदेशिर प्रतिफल. 4
ब) भागिदारीचे पंजीयन. 4
क) धनादेशाच्या रेखांकनाच्या पध्दती. 4
ड) केंद्रीय मुल्यवर्धित कर. 4

B.Com.- III Sem-V
BCOM355 - Commercial Law

Time : Three Hours

Max. Marks : 80

- सूचनाएँ :- 1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. अ) भारतीय करार अधिनियम अंतर्गत स्पष्ट रूप से शुन्य ठराव कौनसे है, यह स्पष्ट किजिए। 8
ब) प्रत्याभूती के (जमानत) करार की विशेषताएँ स्पष्ट किजिए तथा प्रत्याभूती के प्रकार विशद किजिए। 8
- अथवा**
- क) 'मुक्त संमती' यह संकल्पना विस्तार से स्पष्ट किजिए। 16
2. अ) भागीदार के अधिकार स्पष्ट किजिए। 8
ब) भागीदार के प्रकार स्पष्ट किजिए। 8
- अथवा**
- क) वस्तु बिक्री अधिनियम 1930 अंतर्गत वस्तु के प्रदान संबंधी नियम स्पष्ट किजिए। 16
3. अ) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 अंतर्गत 'अनुचित व्यापारी प्रथा' यह संकल्पना स्पष्ट किजिए। 8
ब) परक्राम्य विलेख की व्याख्या किजिए एवं उसकी विशेषताएँ स्पष्ट किजिए। 8
- अथवा**
- क) परक्राम्य विलेख के प्रस्तुतीकरण को स्पष्ट किजिए। परक्राम्य विलेख स्विकृती के लिए प्रस्तुत करने संबंधी नियम स्पष्ट किजिए। 16
4. अ) मुल्यवर्धित कर की व्याख्या किजिए एवं उसका महत्व स्पष्ट किजिए। 8
ब) मुल्यवर्धित कर अंतर्गत बिक्री तथा आंतरराज्यीय बिक्री यह संकल्पना स्पष्ट किजिए। 8
- अथवा**
- क) सेवा कर की संकल्पना स्पष्ट किजिए तथा सेवा कर का शोधन एवं वसुली का अर्थ स्पष्ट किजिए। 16
5. संक्षेप में टिप्पण लिखिए।
- अ) उचित प्रतिफल। 4
ब) भागीदारी का पंजीयन। 4
क) चेक के रेखांकन की पद्धतियाँ। 4
ड) केंद्रीय मुल्यवर्धित कर (CENVAT). 4
